

यीशु मसीह का प्रकाशितवाक्य

1. शीर्षक
2. लेखक
3. प्राप्तकर्ता, स्थान और परिस्थिति
4. तिथि
5. धर्मसूची में स्थान (कैननिसिटी)
6. सर्वनाशी साहित्य (एपोकैलिप्टिक)
7. धर्मविज्ञान
8. विषय-वस्तु और उद्देश्य
9. पुराने नियम से संबंध और प्रतीकवाद
10. व्याख्या की पद्धतियाँ
11. संरचना और रूपरेखा
12. मोटी रूपरेखा
13. संरचना: निरंतरता और समानांतरता
14. 5 दर्शन-श्रृंखलाओं के आधार पर समानांतरता
15. विस्तृत रूपरेखा
16. प्रकाशितवाक्य की एक संभावित बनावट
17. (अ)पवित्र त्रिएकता, अध्याय 12-14
18. प्रकाशितवाक्य में मसीह और उसके नाम
19. आरंभ और अंत – मूसा और यूहन्ना
20. देखी गई टीकाएँ

वध किया हुआ मेम्ना,
यहूदा का सिंह,
और अजगर



वह पुस्तक जो धन्य बनाती है
आराधना के योग्य कौन है?
संसार का राजा कौन है?
फिर से आने वाला प्रभु
कलीसिया के लिए आशा
मेघे की विजय
जो शीघ्र होने वाला है
राजा की वापसी

कलीसिया के लिए सांत्वना

सब बातों का लक्ष्य

भविष्यद्वाणी अटकलबाज़ी के लिए नहीं,

बल्कि प्रेरणा देने के लिए है!

प्रकाशितवाक्य प्रकट करने के लिए दिया गया है!

1. शीर्षक

पुस्तक का शीर्षक पुस्तक के पहले तीन शब्द हैं: यीशु मसीह का प्रकाशितवाक्य। यूनानी में “प्रकाशन” के लिए शब्द है “Apokalypsis”। इसका अर्थ है किसी ढक्कन या परदे को हटाना, अर्थात् “उघाड़ना”। यह केवल स्वयं यीशु मसीह के द्वारा हो सकता है। और यह यीशु मसीह के बारे में भी उघाड़ना है – वह क्या है, उसने क्या किया है और वह क्या करेगा।

बहुत-से लोगों ने इस पुस्तक को बाइबल की अन्य पुस्तकों जितना महत्व नहीं दिया, क्योंकि यह उन्हें अंधेरी और छिपी हुई लगी। पर प्रकाशितवाक्य (यहाँ से संक्षेप में “प्रका.”) का उद्देश्य ठीक इसके उलटा है: उघाड़ना, प्रकाश देना और उत्साहित करना – उसके लिए जो पढ़ता है (केवल उसके लिए नहीं जो समझता है), और जो उसे मानता है, अर्थात् थामे रहता है और उस पर चलता है (1:3)। प्रका. “जिज्ञासुओं” के लिए नहीं, बल्कि “दासों” के लिए है!

2. लेखक

वह अपना परिचय यूहन्ना के रूप में देता है, जो भाई है और क्लेश में सहभागी है (1:4, 9; 22:8)। पर वह अपने बारे में बहुत कम “प्रकट” करता है। यीशु के चेले और प्रेरित यूहन्ना के सिवा और कौन इतनी सहजता से कलीसियाओं के सामने अपना परिचय दे सकता था? शहीद जस्टिन (Justin) (100-165 ई.) और इरेनियस (Irenäus) (115-202) पुष्टि करते हैं कि यीशु का चेला और प्रेरित यूहन्ना ही इसका लेखक है।

फिर भी बहुत पहले ही इस पर प्रश्न उठाया गया, क्योंकि कहा गया कि प्रका. की शैली और भाषा सुसमाचार और पत्रियों से बहुत भिन्न है। अंतरों के बावजूद समानताएँ भी हैं। अंतर अनिवार्य रूप से यह सिद्ध नहीं करते कि लेखक एक ही व्यक्ति नहीं है।

यूहन्ना का अर्थ है “परमेश्वर एक अनुग्रहकारी दाता है”। यीशु उसे और उसके भाई याकूब को “गर्जन के पुत्र” कहता है (मरकुस 3:17)। दोनों अर्थ उसके लेखों में पूरी तरह दिखाई देते हैं।

यूहन्ना लंबे समय तक जीवित रहा, अंत में संभवतः पौलुस की मृत्यु के बाद इफिसुस में। यूहन्ना शहीद होकर मरा या बहुत बूढ़ा होकर “स्वाभाविक” मृत्यु मरा, यह सिद्ध नहीं है। परंपरा उन यातनाओं के बारे में बताती है जब उसे रोम में खौलते तेल में डुबोया गया, पर कहा जाता है कि वह उससे सुरक्षित बच निकला और उसके बाद एजियन सागर के पतमुस द्वीप पर निर्वासित कर दिया गया। वहाँ से वह इफिसुस लौट आया।

3. प्राप्तकर्ता, स्थान और परिस्थिति

ये एशिया माइनर की सात स्थानीय कलीसियाएँ हैं (अध्याय 2 और 3)। प्रश्न यह हो सकता है कि क्या हर कलीसिया को पूरे प्रका. की पूरी प्रति मिली थी या केवल उसके नाम लिखा गया पत्र।

प्राप्तकर्ता, यूहन्ना की तरह, ऐसे लोग थे जो कुछ हद तक सताव और कठिनाइयों में थे, और जिन्हें झूठी शिक्षाओं तथा अन्यजातियों (ज्ञानवाद, Gnostik) और यहूदी धर्म के प्रभावों से संघर्ष करना पड़ता था। यद्यपि सताव लहरों में आता था और हमेशा और हर जगह एक समान तीव्र नहीं था, फिर भी पहली और दूसरी सदी में राज्य और कलीसिया के बीच दूरी का वातावरण स्पष्ट दिखाई देता है।

कहा जाता है कि उस समय नए नियम का शायद कोई भी पत्र इतनी लगन से नहीं पढ़ा गया जितना प्रका., क्योंकि यह सात्वना और प्रोत्साहन के लिए कलीसिया के हृदय से बात करता था। यह हमें प्रेरित करता है कि हम भी इस पत्र को लगन से पढ़कर बड़ी आशीष पा सकते हैं।

पतमुस से, जहाँ प्रका. लिखा गया, प्रका. सात कलीसियाओं को भेजा गया और एक या अधिक संदेशवाहकों के द्वारा उस समय की सामान्य सड़कों से पहुँचाया गया।

4. तिथि

नए नियम के इस सबसे लंबे पत्र के लिखे जाने की तिथि के बारे में दो मत हैं। आरंभिक तिथि वाला मत इसे नीरो (Nero) के शासनकाल (54-68) में रखता है। क्योंकि यूहन्ना को यरूशलेम का मंदिर नापना है, इसलिए यह मंदिर के सन् 70 में नष्ट होने से पहले होना चाहिए।

अधिक व्याख्याकार इसकी तिथि काफ़ी बाद में, दोमितियन (Domitian) के शासनकाल (81-96) में रखते हैं, जैसे इरेनियस, जो पॉलीकार्प (Polykarp) का शिष्य था, और पॉलीकार्प स्वयं यूहन्ना का शिष्य था। दोमितियन पहला सम्राट था जिसका सम्राट-पूजा पंथ था, जिसमें वह स्वयं को प्रभु और परमेश्वर (Dominus et Deus) के रूप में पुजवाता था। यूहन्ना सम्राट-पूजा के सामने जीवते परमेश्वर और मेमे की सच्ची आराधना को रखता है।

लिखे जाने की तिथि का संबंध उस व्याख्या-पद्धति से भी है जिससे प्रका. की व्याख्या की जाती है। इसलिए प्रीटेरिस्ट (Präteristen) और पोस्टमिलेनियलिस्ट भी स्वाभाविक रूप से आरंभिक तिथि को पसंद करते हैं।

5. धर्मसूची में स्थान (कैननिसिटी)

नए नियम की धर्मसूची में, जिसमें कुल 27 पुस्तकें और पत्र हैं, प्रका. उचित ही अंतिम स्थान पर है। नए नियम की एकमात्र भविष्यद्वाणी की पुस्तक होने के नाते यह उन बातों की चर्चा करती है जो लिखे जाने के समय से देखने पर भविष्य में हैं।

प्रका. की प्रामाणिकता, उसका प्रेरितय लेखक होना और इस प्रकार उसका ईश्वर-प्रेरित होना – इन बातों के कारण अपेक्षाकृत जल्दी (दूसरी सदी का दूसरा आधा भाग) उसे नए नियम की धर्मसूची में मान्य स्थान मिल गया, जिसमें शायद सात कलीसियाओं तक उसके तेज़ी से फैलने ने भी सहायता की। दूसरी ओर – पूर्वी कलीसिया में – प्रका. को मान्यता मिलने में 12वीं सदी तक का समय लगा। मुख्य संदेह इस धारणा में था कि प्रका. का लेखक यूहन्ना के सुसमाचार के लेखक से भिन्न (अज्ञात या अपुष्ट) व्यक्ति है। भाषा-शैली निर्विवाद रूप से भिन्न है और

इससे अलग-अलग लेखकों का अनुमान लगाया जा सकता है। भाषा के अंतर को कई कारण समझा सकते हैं: यूहन्ना अरामी बोलता था और उसने प्रका. जल्दी लिखा, जबकि सुसमाचार उसने “बेहतर” यूनानी में लिखा। या उसके पास एक लिपिक था जो अच्छी यूनानी जानता था या यूनानी था और जिसने यूहन्ना की भाषा को सँवारा। प्रकाशितवाक्य की भिन्न शैली जानबूझकर है, और “सर्वनाशी साहित्य” की दृष्टि से ये अंतर अभिप्रेत हैं।

6. सर्वनाशी साहित्य (एपोकैलिप्टिक)

गैर-बाइबलीय और यहूदी सर्वनाशी साहित्य (एपोकैलिप्टिक) एक लेखन- या साहित्य-शैली है, जो दूसरी सदी ईसा पूर्व से दूसरी सदी ईसवी तक यहूदी धर्म में फैली हुई और लोकप्रिय थी। ये लेख चित्रों और प्रतीकों, स्वर्गीय और अंधकारमय प्राणियों का प्रयोग करते थे और बेहतर समय की भविष्यवाणी के द्वारा कठिन समय में प्रोत्साहन देना चाहते थे। लेखक छद्म नाम का प्रयोग करता था (हनोक, अब्राहम, बारूक, एज़्रा आदि)।

एक निश्चित समानता स्पष्ट रूप से दिखाई देती है। इस ईश्वर-प्रेरित पत्र की साहित्यिक शैली सर्वनाशी है, और पाठकों को यह कुछ परिचित या सामान्य बात के रूप में मिली। फिर भी यहूदी सर्वनाशी साहित्य से अंतर इतने बड़े हैं कि प्रका. को भी उसी श्रेणी में नहीं रखा जा सकता: लेखक अपना परिचय देता है और उघाड़ने के स्रोत के रूप में यीशु मसीह का हवाला देता है। इसकी विषय-वस्तु अद्वितीय है। यह यहूदी नहीं, बल्कि मसीही है। इस पुस्तक का सर्वनाशी साहित्य प्रभु यीशु मसीह के व्यक्तित्व से बँधा हुआ है।

7. धर्मविज्ञान

प्रका. का धर्मविज्ञान उससे भिन्न है जो हमें अन्य पत्रियों में, यहाँ तक कि यूहन्ना की, या पौलुस और पतरस की पत्रियों में मिलता है। प्रका. में यह दृश्य धर्मविज्ञान है, जो देखने में होता है। सुनने वाले को आँधी में, आग में, भूकंपों में, पीड़ाओं में, निंदा और उन्माद में साथ ले जाया जाता है। प्रका. का धर्मविज्ञान नए नियम की शिक्षा पर आधारित है, पर विशेष रूप से दर्शनों में पुराने नियम पर। प्रका. सीधे पुराने नियम के प्रतीकवाद से जुड़ता है और उसे पूर्णता तक आगे ले जाता है।

8. विषय-वस्तु और उद्देश्य

परमेश्वर का उद्धार केवल एक व्यक्तिगत, निजी मामला नहीं है। प्रका. परमेश्वर की उस सार्वभौम योजना को उघाड़ता है, जिसके द्वारा वह अपने पुत्र यीशु मसीह के द्वारा पृथ्वी (ब्रह्मांड) पर फिर से अधिकार करता और उसे “वापस जीत लेता” है। प्रका. नई सृष्टि में उसकी योजना की पूर्णता तक ले जाता है। वहाँ तक का मार्ग प्रका. में ऐसे वर्णित है जैसा नए नियम के किसी अन्य पत्र में नहीं। फिर भी प्रका. में अंत समय की कोई विस्तृत “समय-सारणी” नहीं है।

पाठक के लिए, विश्वासी के लिए, प्रका. का उद्देश्य वह स्वयं बताता है: धर्मी और भी धर्मी बने और धार्मिकता से चले, और पवित्र (अपनी बातों और कामों में) और भी पवित्र बने (22:11)।

पुस्तक का उद्देश्य सांत्वना और प्रोत्साहन है। प्रका. हमें निश्चय दिलाता है कि परमेश्वर का सिंहासन अटल है, कि परमेश्वर उस पर बैठा है, कि सिंहासन चुप नहीं है और उसकी एक योजना है। परमेश्वर वहाँ से संसार की घटनाओं में शक्तिशाली और प्रभावी ढंग से हस्तक्षेप करता है, ताकि पाप और अधर्म का अंत करे और पापी को दंड दे। इस प्रश्न पर कि “क्या सब कुछ हमेशा ऐसे ही चलता रहेगा?” प्रका. पूरे भरोसे से उत्तर देता है: नहीं! परमेश्वर और

मेम्ना विजयी होंगे। फिर भी प्रभु के प्रकट होने तक मसीहियों के लिए यह विजय जैसा नहीं, बल्कि पराजय जैसा दिखेगा, क्योंकि बहुत-से शहीद होकर मरते हैं। पर उनका मरना ही उनकी विजय है, ठीक वैसे ही जैसे मेम्ने ने अपनी मृत्यु के द्वारा जय पाई।

यह दृष्टि और इस पत्र के द्वारा परमेश्वर के पुत्र का प्रकाशन अभी दुख उठा रही कलीसिया को परमेश्वर और मेम्ने की आराधना की ओर ले जाता है। यही बड़ा अंतर है: पृथ्वी के निवासी मूर्तियों की आराधना करते हैं, मसीही मेम्ने की।

9. पुराने नियम से संबंध और प्रतीकवाद

प्रकाशितवाक्य केवल पुराने नियम के प्रकाश में ही समझ में आता है। प्रका. में पूरे पुराने नियम के 500 से अधिक संकेत हैं (पर कोई सीधा उद्धरण नहीं)। यूहन्ना सबसे अधिक दानियेल, यशायाह और यहजेकेल का, और साथ ही निर्गमन का हवाला देता है।

प्रका. की प्रतीकात्मक भाषा स्पष्ट है और अधिकांशतः – पर केवल नहीं – पुराने नियम पर आधारित है।

- ऐसे प्रतीक, जिन्हें बाइबल की अन्य पुस्तकों के आधार पर समझाया जा सकता है
- ऐसे प्रतीक, जिन्हें प्रका. स्वयं समझाता है
- ऐसे प्रतीक, जिन्हें प्रका. के संदर्भ से समझाया जा सकता है
- ऐसे प्रतीक, जिन्हें अन्य (या बाहरी) स्रोतों के आधार पर समझाया जा सकता है

10. व्याख्या की पद्धतियाँ

कलीसिया के इतिहास के दौरान प्रका. को देखने के अलग-अलग दृष्टिकोण उभरकर सामने आए हैं। इसलिए आज व्याख्या की पद्धतियों (स्कूलों) की बात की जा सकती है। वे मूल रूप से इस बात में भिन्न हैं कि यूहन्ना जिन बातों और घटनाओं के बारे में लिखता है, उन्हें किस समय में रखा जाए। इसी तरह, और पिछली बात के परिणामस्वरूप भी, प्रतीकों के अर्थ लगाने में अंतर है। यह अर्थ संयम और सावधानी से लगाया जाना चाहिए, क्योंकि कुछ प्रतीकों के विषय में हमारे पास अर्थ की 100% निश्चितता पाने की संभावना नहीं है।

- **प्रीटेरेस्ट व्याख्या** (समकालीन इतिहास के अनुसार): भविष्यद्वाणियाँ यूहन्ना के समय में ही पूरी हो चुकी हैं। जैसे, पशु और 666 की संख्या नीरो के व्यक्तित्व में पूरी हुई।
- **ऐतिहासिक व्याख्या**: भविष्यद्वाणियों की पूर्ति कलीसिया के पूरे इतिहास में खोजी और समझाई जाती है (जैसे लूथर (Luther), अन्य सुधारक, आइज़क न्यूटन (Isaak Newton))।
- **भविष्यवादी व्याख्या** (अंतिम इतिहास के अनुसार): अधिकतर भविष्यद्वाणियाँ यूहन्ना की दृष्टि से और हमारी दृष्टि से, सन् 2012 में, अभी पूरी होनी हैं, उस समय में जो मसीह के सब मनुष्यों को दिखाई देते हुए लौटने से ठीक पहले होगा (जैसे J.N. Darby, C.I. Scofield, Walvoord, Ryrie, Hal Lindsay, विशेषकर डिस्पेंसेशनलिज़्म (युग-विभाजनवाद) का दृष्टिकोण)।
- **आदर्शवादी व्याख्या** (इतिहास से परे): भविष्यद्वाणियाँ ऐतिहासिक घटनाओं का वर्णन नहीं करतीं, बल्कि विशेष ढंग से बार-बार यह व्यक्त करती हैं कि परमेश्वर दुष्ट और बुराई पर विजय पाएगा।

- **उद्धार-इतिहास पर आधारित व्याख्या:** यह व्याख्या किसी एक मॉडल से बँधती नहीं, बल्कि हर पाठ की व्याख्या उस ढंग से करने का प्रयास करती है जो उस पाठ के लिए सबसे उपयुक्त हो। इस प्रकार इस व्याख्या-पद्धति में पिछली चारों विधियाँ प्रयोग होती हैं, बिना किसी एक व्याख्या-मॉडल से दासता की तरह बँधे (T. Zahn, O. Cullmann, G.E. Ladd)। मूल रूप से इतिहास को उसके लक्ष्य की ओर से देखा जाता है: मसीह का आना भविष्य का वह मोड़ है जो पुराने का अंत करता है और नए का आरंभ करता है।

पूर्णता के लिए अलग-अलग व्याख्या-पद्धतियों के साथ 1000 वर्ष के राज्य के विषय में अलग-अलग मतों का भी उल्लेख करना आवश्यक है, जो फिर से ऊपर बताई गई व्याख्या-पद्धतियों से संबंधित हैं।

अमिलेनियलिज़्म (सहस्राब्दी-निषेधवाद): 1000 वर्ष के राज्य को आत्मिक रूप में और यीशु के स्वर्गारोहण से ही विद्यमान (साकार) माना जाता है। फिर यीशु के भविष्य में आने के साथ नई सृष्टि आरंभ होती है।

पोस्टमिलेनियलिज़्म (उत्तर-सहस्राब्दीवाद): 1000 वर्ष का राज्य लंबे समय में सुसमाचार के फैलने के द्वारा बाहरी रूप में बनेगा और फिर से आने वाले मसीह को सौंप दिया जाएगा।

प्रीमिलेनियलिज़्म (पूर्व-सहस्राब्दीवाद): 1000 वर्ष का राज्य यीशु के आने, अर्थात् मसीहा के आगमन के साथ आरंभ होता है। यह पूरी तरह भविष्य का है और इसे शाब्दिक रूप में समझना है। प्रीमिलेनियलिज़्म के भीतर 2 धाराएँ हैं जो मूल रूप से इस मत को मानती हैं:

1. डिस्पेंसेशनलिज़्म (सबसे अधिक फैला हुआ): इस शांति-राज्य में सारी प्रतिज्ञाएँ आत्मिक रूप से पुनःस्थापित राष्ट्रीय इस्राएल जाति पर पूरी होती हैं, तब यरूशलेम में मंदिर और बलिदान-सेवा के साथ, और वहाँ से मसीहा के विश्व-शासन के साथ। कलीसिया मसीह के साथ राज्य करती है। प्रका. के अध्याय 4 – 19 केवल कलीसिया के उठा लिए जाने के बाद के समय का वर्णन करते हैं, जो 7 वर्ष का क्लेश-काल है।
2. शास्त्रीय या ऐतिहासिक प्रीमिलेनियलिज़्म: आरंभिक मसीही भविष्य के एक शांति-राज्य की प्रतीक्षा करते थे और उससे पहले मसीह-विरोधी के शासन और उसके द्वारा मसीहियों पर अत्याचार की भी। प्रका. भविष्य की घटनाओं का वर्णन करता है, पर वह प्रभु के आने तक कलीसिया के पूरे इतिहास से संबंधित है, और प्रभु के आने पर ही उठा लिया जाना भी होता है।

यह आरेख प्रीमिलेनियलिज़्म के मत को दिखाता है:

(आरेख: बाएँ से दाएँ समय-रेखा)

- मसीह का 1. आगमन (कूस, ऊपर की ओर तीर)
- कलीसिया का समय
- क्लेश
- मसीह का 2. आगमन (नीचे की ओर तीर)
- मिलेनियम – 1000 वर्ष का राज्य

11. संरचना और रूपरेखा

इस विषय पर बहुत-से सुझाव हैं। अलग-अलग रूपरेखाओं का आधार अलग-अलग दृष्टिकोण और पहलू हैं। ये मुख्य बिंदुओं, विषयों, चरम बिंदुओं, साहित्यिक संरचना, बीच के अंशों, विरामों, संख्याओं और अन्य कसौटियों पर

आधारित होती हैं।

हर हाल में रूपरेखा और पूरे पाठ की संरचना को समझना इस बात को भी तय करता है कि कोई पुस्तक को कैसे समझता है। इसलिए इस स्थान पर गहन (व्यक्तिगत) परिश्रम बहुत सहायक है।

बहुत-से व्याख्याकार अध्याय 1 पद 19 में रूपरेखा की कुंजी देखते हैं। मसीह यूहन्ना से कहता है:

इसलिए जो बातें

1. तू ने देखीं	महिमित मसीह का दर्शन, 1:12-20
2. और जो हैं	एशिया माइनर की 7 कलीसियाएँ, पहली सदी, अध्याय 2 और 3
3. और जो इनके बाद होने वाली हैं, उन्हें लिख ले	अध्याय 4 से, या 6 से, पहली सदी से आगे

इससे प्रकाशितवाक्य का 2 भागों में एक मोटा विभाजन संभव होगा:

1. अध्याय 1-3 (जो यूहन्ना ने देखा था, मसीह, और जो उसने देखा, कलीसियाएँ)
2. अध्याय 4-22 (स्वर्गीय दर्शन, नई सृष्टि की पूर्णता तक)।

व्याख्याकारों में यह स्पष्ट नहीं है कि यूहन्ना इस पद में प्रकाशितवाक्य का “दो भागों में” या “तीन भागों में” विभाजन देना भी चाहता है या नहीं। इस पद की एक सरल व्याख्या 2 या 3 (समय-)इकाइयों की ओर नहीं, बल्कि बस उस पूरे समय की ओर संकेत करती है जिसे नया नियम “अंतिम दिन” कहता है। ये यीशु के पहले आगमन के साथ ही आरंभ हो गए थे और तब तक चलेंगे जब तक प्रभु यीशु अंतिम बार, दूसरी बार, नहीं आएगा।

G. K. Beale इस संदर्भ में एक उल्लेखनीय संकेत देते हैं: “(पद 19 का) अंतिम भाग (जो इनके बाद होने वाली हैं) संभवतः दानियेल 2:28, 29, 45 की ओर एक जानबूझकर किया गया संकेत है, जो मूल संदर्भ में परमेश्वर के राज्य के दर्शन के युगांत-संबंधी ढाँचे और विस्तार से संबंधित है, जो पूरी पृथ्वी को घेर लेगा। दानियेल 2:28 और 29 में ‘अंतिम दिन’ अभिव्यक्ति ‘इन बातों के बाद’ के पर्याय के रूप में प्रयोग हुई है। यदि ‘इन बातों के बाद’ सामान्य युगांत-संबंधी (अंत समय के या अंतिम) युग के लिए प्रयोग होता है, तो 1:19 ऐसा संकीर्ण कालक्रम-सूत्र व्यक्त नहीं कर सकता। यह संभवतः उस अंत समय की अवधि से संबंधित है, जिसमें उसका आरंभ अतीत में है, और वर्तमान तथा भविष्य भी।”

एक सरल और आसानी से समझ में आने वाला विभाजन प्रकाशितवाक्य को 4 भागों में बाँटता है, जिसमें पहला और अंतिम भाग पत्र का आरंभ और पत्र का समापन हैं, और उनके बीच दोनों मुख्य भाग रखे गए हैं:

12. मोटी रूपरेखा

पत्र का आरंभ 1:1-8

पहला मुख्य भाग:

पृथ्वी पर दर्शन: मनुष्य का पुत्र और 7 कलीसियाओं को 7 संदेश 1:9- 3:21

मनुष्य के पुत्र और 7 सोने की दीवटों का दर्शन 1:9-20

7 कलीसियाओं को 7 संदेशों का लिखवाया जाना 2:1- 3:21

दूसरा मुख्य भाग:

स्वर्ग में दर्शन: “जो इसके बाद होने वाला है” 4:1- 22:5

- पहली दर्शन-श्रृंखला: परमेश्वर का स्वर्गीय सिंहासन-कक्ष; 7 मुहरें 4:1- 8:1
- दूसरी दर्शन-श्रृंखला: 7 तुरहियाँ 8:(1) 2- 11:19
- तीसरी दर्शन-श्रृंखला: दृश्य (स्त्री और बालक, अजगर, मीकाएल, समुद्र से और पृथ्वी से निकलने वाला पशु) और ऐतिहासिक विवरण 11:19- 15:4
- चौथी दर्शन-श्रृंखला: क्रोध या न्याय के 7 कटोरे 15:5- 19:10
- पूरक दर्शन: वेश्या बेबीलोन 17:1- 19:10
- पाँचवीं दर्शन-श्रृंखला: परमेश्वर की विजय और अंतिम न्याय, 19:11- 22:5
- पूरक दर्शन: मेम्ने की दुल्हन - नई सृष्टि 21:9- 22:5

पत्र का समापन 22:6-21

13. संरचना: निरंतरता और समानांतरता

एक सार्थक रूपरेखा की खोज में एक महत्वपूर्ण प्रश्न वर्णित घटनाओं का समय-क्रम है।

एक मत प्रका. की सभी घटनाओं को कालक्रम के अर्थ में एक के बाद एक घटने वाली मानता है।

दूसरा मत प्रकाशितवाक्य के मुख्य भाग को इस तरह देखता है कि वह समानांतर चलने वाले कई चक्रों की बात करता है। ये साधारण दोहराव नहीं हैं, बल्कि – व्याख्या करने वाले बीच के अंशों से बार-बार रुकने वाली – दर्शन-श्रृंखलाएँ हैं, जिनमें पूरा मसीही युग समाया हो सकता है। ठीक-ठीक और निश्चय के साथ यह नहीं कहा जा सकता कि वे कहाँ आरंभ होती हैं, पर उनका अंत हमेशा प्रभु यीशु मसीह का प्रकट होना है।

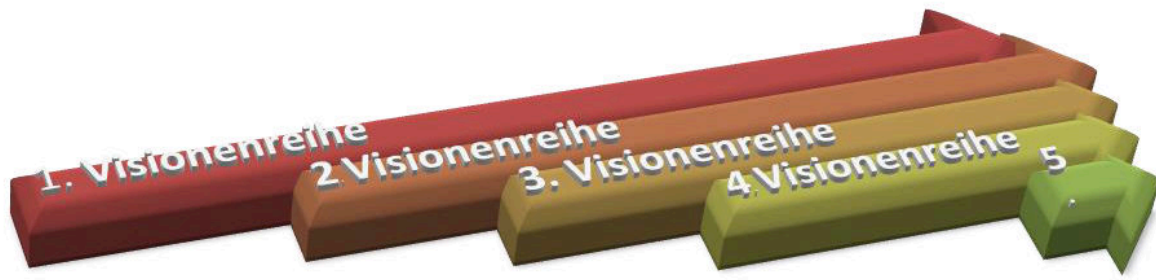
कालक्रम के अनुसार एक के बाद एक होने के विपरीत इस समानांतरता का आधार किस बात पर रखा जा सकता है?

जैसा कि नीचे की तालिका में दिखाया गया है, ध्यान खींचने वाली समानताएँ दिखाई देती हैं। सबसे महत्वपूर्ण यह है कि पाठ में कई बार प्रभु यीशु मसीह के आने का उल्लेख है। यद्यपि इस घटना का सबसे गहन वर्णन अध्याय 19:12 में जाकर होता है, फिर भी उससे पहले भी कई बार इसकी विस्तार से चर्चा होती है। यह आगमन और उसके बाद होने वाली परमेश्वर की स्तुति एक लक्ष्य और स्थिर बिंदु है, जो हर बार एक दर्शन-श्रृंखला को समाप्त करता है और समानांतर रूपरेखा को सार्थक बनाता है।

14. 5 दर्शन-श्रृंखलाओं के आधार पर समानांतरता

4:1- 8:1	8:1- 11:18	11:19- 15:4	15:5- 19:10	19:11- 22:5
खोला गया	खोला गया	खोला गया	खोला गया	खोला गया

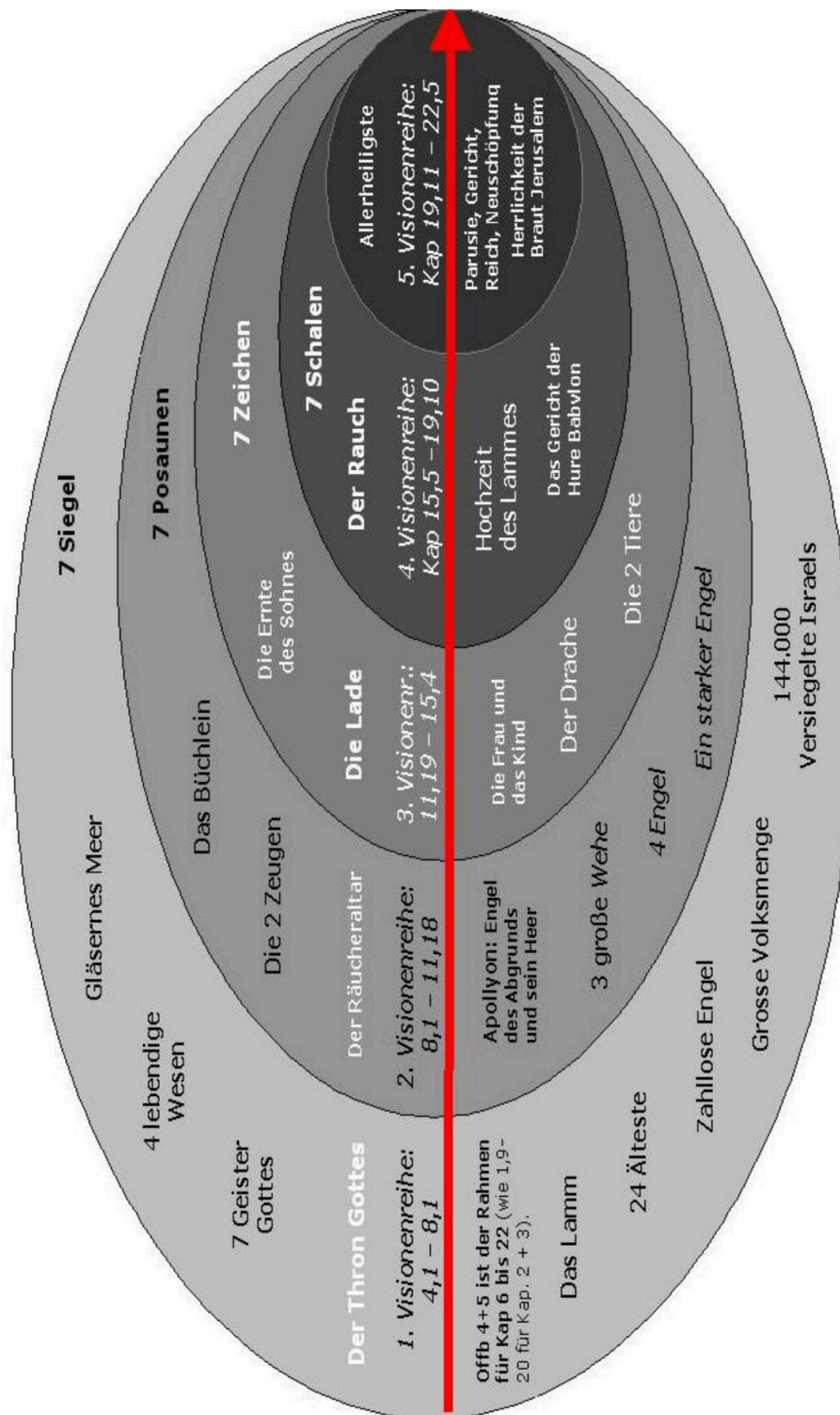
4:1- 8:1	8:1- 11:18	11:19- 15:4	15:5- 19:10	19:11- 22:5
एक द्वार - स्वर्ग में	7वीं मुहर (अब जाकर पुस्तक खुली है); सत्राटा - स्वर्ग में	परमेश्वर का मंदिर - स्वर्ग में	साक्षी के तम्बू का मंदिर - स्वर्ग में	स्वर्ग
सिंहासन	सोने की धूप-वेदी	वाचा का संदूक	परमेश्वर की महिमा और सामर्थ्य का धुआँ	विश्वासयोग्य और सत्य
बिजलियाँ शब्द गर्जन	शब्द गर्जन बिजलियाँ भूकंप	बिजलियाँ शब्द गर्जन भूकंप ओले	बिजलियाँ शब्द गर्जन सबसे बड़ा भूकंप सबसे बड़े ओले	वह स्वयं व्यक्तिगत रूप से आता है
7 मुहरें	7 तुरहियाँ	(7 चिन्ह / खंड)	7 कटोरे	7 बार "फिर मैं ने देखा"
6वीं मुहर: मसीह का आगमन	7वीं तुरही: मसीह का आगमन	पृथ्वी की कटनी: मसीह का आगमन	7वाँ कटोरा: मसीह का आगमन	मसीह का आगमन
बीच का अंश: अध्याय 7: 1,44,000 बड़ी भीड़	बीच का अंश: अध्याय 10, 11 (आरंभ)	बीच का अंश: अध्याय 14 (आरंभ): 1,44,000	लंबा परिशिष्ट: वेश्या: बेबीलोन	लंबा परिशिष्ट: दुल्हन: नया यरूशलेम
7:11-12: जयजयकार/आराधना पद 12: स्तुति, महिमा, ज्ञान, धन्यवाद, आदर, सामर्थ्य और शक्ति हमारे परमेश्वर को ..	11:16 आदि: जयजयकार/आराधना पद 17: .. हे प्रभु परमेश्वर, सर्वशक्तिमान, .. क्योंकि तू ने अपनी बड़ी सामर्थ्य को अपने हाथ में ले लिया है...	15:3 आदि: जयजयकार/आराधना पद 3: हे प्रभु परमेश्वर, सर्वशक्तिमान, तेरे कार्य महान और अद्भुत हैं ..	19:1 आदि: जयजयकार/आराधना पद 1: उद्धार और महिमा और आदर और सामर्थ्य प्रभु हमारे परमेश्वर ही का है	
7:17: मेम्ना जो सिंहासन के बीच में है .. उनकी रखवाली करेगा और उन्हें जीवन रूपी जल के स्रोतों के पास ले जाया करेगा	11:17-18: तू ने राज्य करना आरंभ किया है .. अपने दासों को प्रतिफल देने का	15:3-4: [तू] पवित्र लोगों का राजा .. सब जातियाँ आकर तेरे सामने दण्डवत् करेंगी	19:6: प्रभु ने राज्य करना आरंभ किया है .. पद 9: धन्य वे हैं, जो मेम्ने के विवाह के भोज में बुलाए गए हैं	22:3: परमेश्वर और मेम्ने का सिंहासन .. पद 5: [उसके दास] युगानुयुग 'राजाओं के रूप में' राज्य करेंगे



(आरेख: पाँच सीढ़ीनुमा तीर, जो सब एक ही लक्ष्य की ओर जाते हैं; पहला सबसे लंबा है, हर अगला बाद में आरंभ होता है:)

- 1. दर्शन-श्रृंखला
- 2 दर्शन-श्रृंखला
- 3. दर्शन-श्रृंखला
- 4 दर्शन-श्रृंखला
- 5

Die Gliederung der Offenbarung anhand der 5 Visionenreihen



5 दर्शन-श्रृंखलाओं के आधार पर प्रकाशितवाक्य की रूपरेखा

(आरेख: एक के भीतर एक पाँच दीर्घवृत्त; एक लाल तीर बाहरी दीर्घवृत्त से सबसे भीतरी दीर्घवृत्त तक जाता है। बाहर से भीतर की ओर:)

- 7 मुहरें – परमेश्वर का सिंहासन – 1. दर्शन-श्रृंखला: 4:1 – 8:1
- काँच का समुद्र
- 4 जीवित प्राणी

- परमेश्वर की 7 आत्माएँ
- **प्रका. 4+5 अध्याय 6 से 22 का ढाँचा है** (जैसे 1:9-20 अध्याय 2 + 3 का)।
- मेम्रा
- 24 प्राचीन
- असंख्य स्वर्गदूत
- बड़ी भीड़
- इस्राएल के 1,44,000 मुहर लगाए हुए लोग
- **7 तुरहियाँ** – धूप-वेदी – 2. दर्शन-श्रृंखला: 8:1 – 11:18
- छोटी पुस्तक
- 2 गवाह
- **अपुल्लयोन: अथाह कुंड का दूत और उसकी सेना**
- 3 बड़ी हाय
- 4 स्वर्गदूत
- एक बलवन्त स्वर्गदूत
- **7 चिन्ह – संदूक** – 3. दर्शन-श्रृं.: 11:19 – 15:4
- पुत्र की कटनी
- स्त्री और बालक
- अजगर
- 2 पशु
- **7 कटोरे – धुआँ** – 4. दर्शन-श्रृंखला: अध्याय 15:5 – 19:10
- मेम्रे का विवाह
- वेश्या बेबीलोन का न्याय
- परमपवित्र स्थान – 5. दर्शन-श्रृंखला: अध्याय 19:11 – 22:5
- पारूसिया (आगमन), न्याय, राज्य, नई सृष्टि
- दुल्हन यरूशलेम की महिमा

15. विस्तृत रूपरेखा

पत्र का आरंभ 1:1-8

1. शीर्षक: 1:1 (आरंभ)
2. स्रोत और उद्देश्य: 1:1-2
3. धन्य-वचन: 1:3
4. नमस्कार: 1:4-5 (आरंभ)
5. स्तुति-वचन (डॉक्सोलॉजी): 1:5-6

6. विषय: 1:7

7. प्रकाशितवाक्य के वास्तविक देने वाले का परिचय: 1:8

पहला मुख्य भाग: पृथ्वी पर दर्शन: मनुष्य का पुत्र और 7 कलीसियाओं को 7 संदेश 1:9-3:21

सात कलीसियाओं को सात संदेशों के लिखवाए जाने की भूमिका 1:9-20

1. यूहन्ना की बाहरी परिस्थितियाँ: 1:9

2. प्रभु का परिचय और यूहन्ना को उसका आदेश: 1:10-11

3. सात दीवटें 1:12

4. मनुष्य का पुत्र: 1:13-16

5. यूहन्ना की प्रतिक्रिया और प्रभु के द्वारा प्रोत्साहन 1:17-18

6. आदेश का दोहराया जाना: 1:19

7. तारों और दीवटों का अर्थ: 1:20

I. इफिसुस को 2:1-7

1. संबोधन और आत्म-परिचय: 2:1

2. सराहना: 2:2-3

3. उलाहना: 2:4

4. चेतावनी के साथ निर्देश: 2:5

5. प्रशंसा: 2:6

6. सुनने का आह्वान

7. जय पाने वाले से प्रतिज्ञा: 2:7

II. स्मरना को 2:8-11

1. संबोधन और आत्म-परिचय: 2:8

2. सराहना: 2:9

3. प्रोत्साहन और तैयारी: 2:10 (आरंभ)

4. निर्देश: 2:10

5. प्रतिफल की प्रतिज्ञा: 2:10 (अंत)

6. सुनने का सामान्य आह्वान: 2:11 (आरंभ)

7. जय पाने वाले से प्रतिज्ञा: 2:11 (अंत)

III. पिरगमुन को 2:12-17

1. संबोधन और आत्म-परिचय: 2:12

2. सराहना: 2:13

3. उलाहना: 2:14-15

4. निर्देश: 2:16
5. न्याय की चेतावनी: 2:16
6. सुनने का सामान्य आह्वान: 2:17 (आरंभ)
7. जय पाने वाले से प्रतिज्ञा: 2:17 (अंत)

IV. थुआतीरा को 2:18-29

1. संबोधन और आत्म-परिचय: 2:18
2. सराहना: 2:19
3. उलाहना: 2:20-21
4. न्याय की चेतावनी: 2:22-23
5. विश्वासयोग्य लोगों के लिए प्रोत्साहन: 2:24-25
6. जय पाने वाले से प्रतिज्ञा: 2:26-28
7. सुनने का सामान्य आह्वान: 2:29

V. सरदीस को 3:1-6

1. संबोधन और आत्म-परिचय: 3:1
2. सराहना = उलाहना: 3:1
3. निर्देश: 3:2-3 (आरंभ)
4. न्याय की चेतावनी: 3:3 (अंत)
5. विश्वासयोग्य लोगों के लिए प्रोत्साहन: 3:4
6. जय पाने वाले से प्रतिज्ञा: 3:5
7. सुनने का सामान्य आह्वान: 3:6

VI. फिलदिलफिया को 3:7-13

1. संबोधन और आत्म-परिचय: 3:7
2. सराहना और सांत्वना: 3:8
3. प्रोत्साहन (शत्रुओं के संबंध में): 3:8-9
4. सुरक्षा की प्रतिज्ञा: 3:10
5. निर्देश: 3:11
6. जय पाने वाले से प्रतिज्ञा: 3:12
7. सुनने का सामान्य आह्वान: 3:13

VII. लौदीकिया को 3:14-21

1. संबोधन और आत्म-परिचय: 3:14
2. सराहना = उलाहना: 3:15
3. न्याय की चेतावनी: 3:16-17

4. निर्देश : 3:18-19
5. विश्वासयोग्य लोगों के लिए प्रतिज्ञा: 3:20
6. जय पाने वाले से प्रतिज्ञा: 3:21
7. सुनने का सामान्य आह्वान: 3:22

दूसरा मुख्य भाग: स्वर्ग में दर्शन: “जो इसके बाद होने वाला है” 4:1- 22:5

I. पहली दर्शन-श्रृंखला: सात मुहरें 4:1-8:1

सात मुहरों की भूमिका: इतिहास का परमेश्वर और उसका परिवेश 4:1 - 5:14

1. स्वर्ग में द्वार का खुलना और दर्शी का स्वर्ग में पहुँचाया जाना 4:1-2 (आरंभ)
2. सिंहासन और सिंहासन पर विराजमान: 4:2-3
3. सिंहासन का परिवेश: 4:4-8
4. 24 प्राचीनों के द्वारा सिंहासन पर विराजमान की आराधना: 4:9-11
5. सिंहासन पर विराजमान के हाथ में पुस्तक: 5:1-5
6. सिंहासन के बीच में मेम्रा: 5:6-7
7. मेम्रे की आराधना: 5:8-14

पहली छह मुहरों का खोला जाना 6:1 -17

- पहली मुहर: धनुष और विजय-मुकुट: विजय-अभियान, जीतें: 6:1-2
- दूसरी मुहर: एक बड़ी तलवार: युद्ध: 6:3-4
- तीसरी मुहर: एक तराजू: अकाल: 6:5-6
- चौथी मुहर: मृत्यु: तलवार, अकाल, (महामारी-)मृत्यु और जंगली पशुओं के द्वारा मार डालने का अधिकार: 6:7-8
- पाँचवीं मुहर: वेदी के नीचे शहीदों के प्राण: 6:9, 11
- छठी मुहर: हलचलें: 6:12, 17

बीच के दो दर्शन 7:1-17

- 1,44,000 पर मुहर लगाया जाना: 7:1-8
- सिंहासन के सामने अनगिनत भीड़: 7:9-17

सातवीं मुहर का खोला जाना 8:1

II. दूसरी दर्शन-श्रृंखला: सात तुरहियाँ 8:(1) 2- 11:19

सात तुरहियों की भूमिका 8:(1) 2 -6

- तुरही वाले स्वर्गदूतों का प्रकट होना: 8:2
- धूपदान वाला स्वर्गदूत: 8:3-5
- तुरही फूँकने की तैयारी: 8:6

पहली छह तुरहियों का फूँका जाना 8:7 - 9:21

- पहली तुरही: पृथ्वी: निवास और वनस्पति-आहार: 8:7
- दूसरी तुरही: समुद्र: मछली पकड़ना और व्यापार: 8:8-9
- तीसरी तुरही: जल: जीवन की सबसे आवश्यक वस्तु: 8:10-11
- चौथी तुरही: आकाश के पिँड और तीन हाय की घोषणा: 8:13
- पाँचवीं तुरही (पहली हाय) और आगे की दो हाय की घोषणा: 9:1-12
- छठी तुरही (दूसरी हाय): 9:13-21

बीच के दो दर्शन 10:1-11:14

- छोटी पुस्तक वाला स्वर्गदूत: 10:1-11
- मंदिर का नापा जाना और यरूशलेम में दो गवाह: 11:1-14

सातवीं तुरही का फूँका जाना 11:15-18

- तीसरी हाय की घोषणा: 11:14
- सातवीं तुरही का फूँका जाना (तीसरी हाय): 11:15 (आरंभ)
- परमेश्वर के राज्य की घोषणा: 11:15 (मध्य)
- 24 प्राचीनों के द्वारा परमेश्वर की आराधना: 11:16-18

III. तीसरी दर्शन-श्रृंखला: अतिरिक्त दृश्य और ऐतिहासिक विवरण 11:19-15:4

भूमिका: स्वर्ग में मंदिर का खुलना 11:19

1. अदृश्य कट्टर शत्रु के विषय में दृश्य: स्त्री के विरुद्ध अजगर का संघर्ष 12:1 -17

- पहला चित्र: नवजात बालक पर अजगर का आक्रमण: 12:1-6
- पहला चिन्ह: जनने वाली स्त्री: 12:1-2
- दूसरा चिन्ह: स्त्री और उसके बालक को धमकाने वाला अजगर: 12:3-4
- बालक का जन्म और उसकी रक्षा: 12:5
- स्त्री का भागना और उसकी रक्षा: 12:6
- दूसरा चित्र: स्वर्ग में अजगर का विफल युद्ध: 12:7-12
- उसका पराजित होना और पृथ्वी पर गिराया जाना: 12:7-9
- उसके पराजित होने पर स्वर्ग में जयजयकार: 12:10-12
- तीसरा चित्र: स्त्री और उसकी बाकी संतान पर अजगर का आक्रमण: 12:13-17
- उसके द्वारा स्त्री का पीछा और स्त्री की रक्षा: 12:13-16
- स्त्री की बाकी संतान के विरुद्ध उसका युद्ध: 12:17

2. दृश्य कट्टर शत्रु के विषय में दृश्य: पवित्र लोगों के विरुद्ध पशु का संघर्ष 13:1 -18

- समुद्र से निकलने वाला पशु: 13:1-10

- वर्णन: 13:1-3
- उसकी आराधना: 13:4
- परमेश्वर की उसके द्वारा निंदा: 13:5-6
- पवित्र लोगों के विरुद्ध उसका युद्ध: 13:7-8
- पवित्र लोगों को विश्वासयोग्य रहने का आह्वान: 13:9-10
- पृथ्वी से निकलने वाला पशु: प्रका. 13:11-18
- दूसरे पशु का वर्णन: 13:11-14 (आरंभ)
- दूसरे पशु की शिक्षा: 13:14-18

3. लक्ष्य की एक झलक: सिय्योन पर मेघे के साथ 1,44,000 – और उनका गीत 14:1-5

- उनका वर्णन: 14:1
- उनका गीत: 14:2-3
- उनकी पहचान: 14:4-5

4. न्याय की घोषणा करने वाले तीन स्वर्गदूत 14:6-13

- पहला स्वर्गदूत: सनातन सुसमाचार: 14:6-7
- दूसरा स्वर्गदूत: बेबीलोन गिर पड़ा: 14:8
- तीसरा स्वर्गदूत: धर्मत्याग के विरुद्ध चेतावनी: 14:9-11
- परमेश्वर की आज्ञाओं और यीशु पर विश्वास को थामे रहने का आह्वान: 14:12
- अब से मरने वालों का धन्य कहा जाना: 14:13

5. बादल पर मनुष्य का पुत्र और पुकारने वाले तीन स्वर्गदूत 14:14 -20

- पृथ्वी के अनाज की कटनी: 14:14-16
- पृथ्वी के अंगूरों की कटनी: 14:17-20

6. अंतिम विपत्तियों वाले सात स्वर्गदूतों की तैयारी 15:1

7. लक्ष्य की दूसरी झलक: काँच के समुद्र के पास जय पाने वाले – और उनका गीत 15:2-4

- जय पाने वाले: 15:2
- जय पाने वालों का गीत: 15:3-4

IV. चौथी दर्शन-श्रृंखला: सात कटोरे (= सातवीं तुरही के न्यायों का समापन) 15:5-19:10

सात कटोरों की भूमिका 15:5-16:1

- साक्षी के तम्बू के मंदिर का खुलना: 15:5
- 7 कटोरों के साथ 7 स्वर्गदूतों का प्रकट होना: 15:6-8
- 7 कटोरे उंडेलने की आज्ञा: 16:1

पहले छह कटोरों का उंडेला जाना 16:2-9

- पहले कटोरे का उंडेला जाना: पृथ्वी: 16:2
- दूसरे कटोरे का उंडेला जाना: समुद्र: 16:3
- तीसरे कटोरे का उंडेला जाना: जल: 16:4-7
- चौथे कटोरे का उंडेला जाना: सूर्य: 16:8-9
- पाँचवें कटोरे का उंडेला जाना: पशु का साम्राज्य: 16:10-11
- छठे कटोरे का उंडेला जाना: फरात: 16:12

बीच का दर्शन: युद्ध के लिए इकट्ठा किया जाना 16:13 -16

- राजाओं को इकट्ठा करने के लिए अशुद्ध आत्माओं का निकलना: 16:13-14
- बीच की पुकार: जागते रहने वालों का धन्य कहा जाना: 16:15
- हर-मगिदोन में युद्ध के लिए इकट्ठा किया जाना: 16:16

सातवें कटोरे का उंडेला जाना: वायु 16:17 -21

V. चौथी दर्शन-श्रृंखला का पूरक दर्शन: वेश्या – उसकी झूठी महिमा और उसका पतन 17:1-19:10

वेश्या और पशु 17:1-18

- भूमिका: 17:1-3
- स्त्री का वर्णन: 17:3-6
- स्त्री और पशु के विषय में व्याख्या: 17:7-18

बेबीलोन का विनाश 18:1-24

- पतन की घोषणा: 18:1-3
- उसे छोड़ देने और उसके पापों का बदला देने की चेतावनी: 18:4-7
- उसकी विपत्तियों की घोषणा: 18:8
- उसके पतन पर पृथ्वी के निवासियों का विलाप: 18:9-19
- उसके पतन के परिणाम: 18:21-24

बेबीलोन के विनाश पर चार हल्लिलूय्याह और मेग्ने के विवाह की घोषणा 19:1-10

- पहला हल्लिलूय्याह: 19:1-2
- दूसरा हल्लिलूय्याह: 19:3
- तीसरा हल्लिलूय्याह: 19:4-5
- चौथा हल्लिलूय्याह और मेग्ने के विवाह की घोषणा: 19:6-7
- मेग्ने के विवाह की तैयारी: 19:8-9

दर्शी की प्रतिक्रिया 19:10

VI. पाँचवीं दर्शन-श्रृंखला: परमेश्वर की विजय और अंतिम न्याय: 19:11-22:5

1. यीशु मसीह का पुनरागमन 19:11 -16

- a. स्वर्ग का खुलना: 19:11 (आरंभ)
- b. श्वेत घोड़े पर सवार: 19:11.
- c. सवार का वर्णन: 19:12-16
- उसकी आँखें: 19:12
- उसके मुकुट: 19:12
- उसका नाम: 19:12
- उसका वस्त्र: 19:13
- उसका सारभूत नाम: 19:13
- उसकी सेनाएँ: 19:14
- उसकी तलवार: 19:15
- उसकी आधिकारिक उपाधि: 19:16

2. परमेश्वर के न्याय-भोज की घोषणा 19:17-18

3. पशु और झूठे भविष्यद्वक्ता और उनकी सेनाओं का न्याय 19:19 -21

4. शैतान का अस्थायी न्याय 20:1-3

- a. कार्य करने वाला: 20:1
- b. कार्य: 20:2-3 (आरंभ)
- c. उद्देश्य: 20:3
- d. समय-सीमा: 20:3 (अंत)

5. हज़ार वर्ष का राज्य 20:4-10

- a. पवित्र लोगों का शासन: 20:4-6
- b. शैतान का न्याय: 20:7-10

6. मृतकों का न्याय 20:11-15

- a. न्याय का दृश्य: 20:11-12 (आरंभ)
- b. न्याय की प्रक्रिया: 20:12 (अंत), 13
- c. दंड की आज्ञा: 20:14-15

7. जो नया है 21:1-8

- a. नई सृष्टि: 21:1
- b. नया यरूशलेम: 21:2
- c. परमेश्वर के साथ नई संगति: 21:3-4

- d. यूहन्ना से परमेश्वर के समापन वचन: 21:5-8

VII. चौथी दर्शन-श्रृंखला का पूरक दर्शन: दुल्हन – उसकी महिमा 21:9-22:5

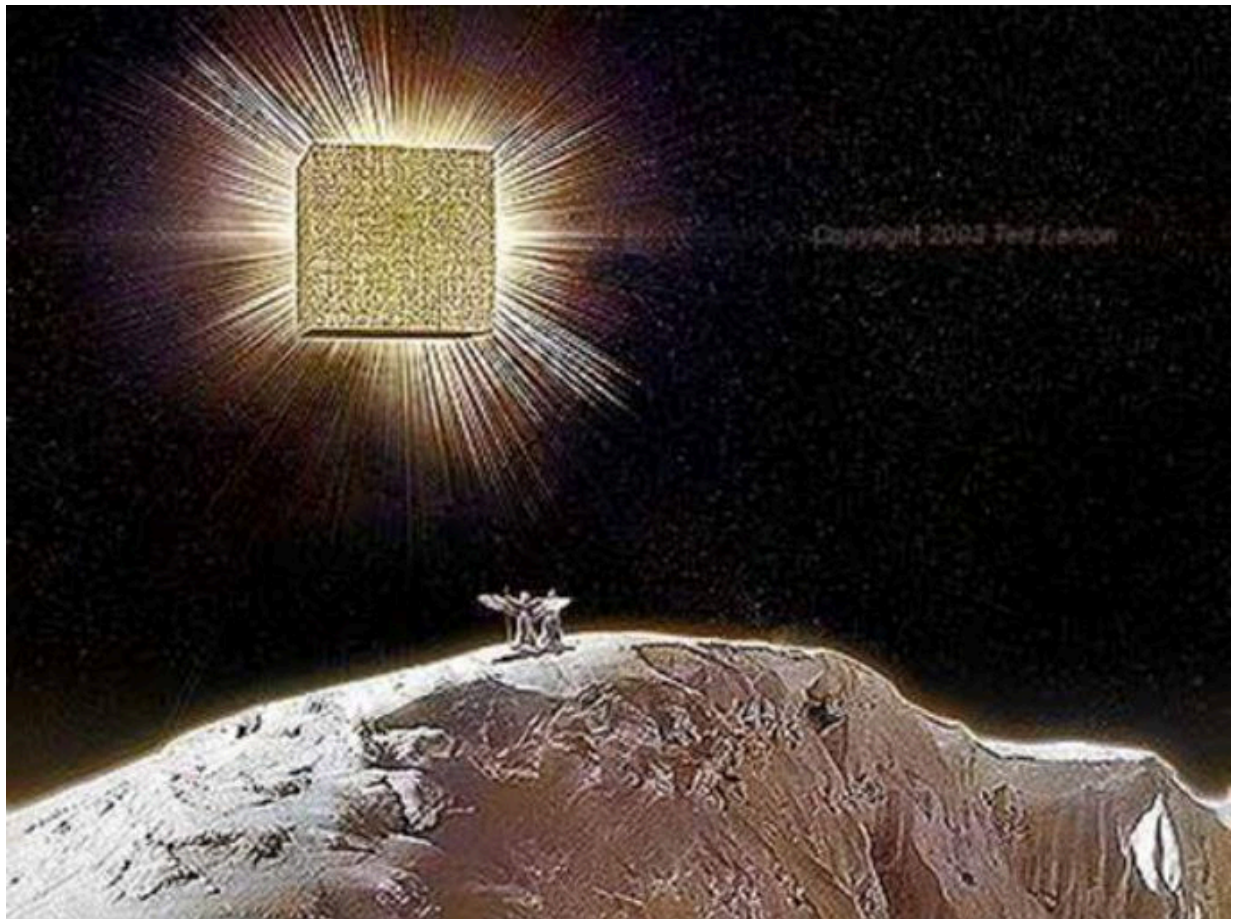
भूमिका 21:9-10

नगर का रूप 21:11-27

1. उसकी चमक (उसकी महिमा): 21:11
2. उसका बाहरी रूप 21:12-14
3. उसके नाप: 21:15-17
4. उसकी निर्माण-सामग्री (सुंदरता, बहुमूल्यता): 21:18-21
5. उसका मंदिर: 21:22
6. उसकी ज्योति: 21:23
7. उसके निवासी: 21:24-27

नगर के निवासियों का जीवन 22:1-5

1. उनका जल: 22:1
2. उनका फल: 22:2 (आरंभ)
3. उनका स्वास्थ्य: 22:2-3 (आरंभ)
4. उनका मार्गदर्शन: 22:3
5. उनकी परमेश्वर-आराधना: 22:3-4
6. उनकी ज्योति: 22:5
7. उनका कार्य: 22:5 (अंत)



पत्र का समापन 22:6-21

इस संदेश के विषय में सात बातें 22:6-19

1. यह सत्य है। 22:6 (आरंभ)
2. यह सामयिक है। 22:6 (मध्य), 7 (आरंभ)
3. इसे मानना है। 22:7
4. यह महत्वपूर्ण है: 22:8-15
5. यह यीशु की ओर से है: 22:16
6. यह सुसमाचार सुनाने वाला है: 22:17
7. इसे बदला नहीं जा सकता: 22:18-19

यीशु के अंतिम वचन 22:20 (आरंभ)

समापन नमस्कार 22:20-21

थॉमस जेटेल (Thomas Jettel) के अनुसार

16. प्रकाशितवाक्य की एक संभावित बनावट

स्थान		अध्याय और पद	विषय-वस्तु
1:1-8	प्रस्तावना (प्रोलॉग)	1-3	प्राक्कथन
			1-2 शीर्षक 3 धन्य-वचन
		4-8	भूमिका
			4-6 अनुग्रह की शुभकामना और मसीह की महिमा के साथ नमस्कार 4क संबोधन, 4ख-5क आशीष की शुभकामना 5ख-6 स्तुति/डॉक्सोलॉजी 7-8 मुख्य विषय (नाटक) का आरंभ 7 (पुस्तक का) विषय/आदर्श-वाक्य 8 परमेश्वर, प्रभु: जो है, जो था और जो आने वाला है
1:9-3:22	पहला अंक या इकाई या चक्र	परीक्षा और मूल्यांकन में पृथ्वी पर कलीसिया	
		1:9-20	प्रील्यूड (आरंभिक वादन) बुलाहट का दर्शन: महिमित मसीह कलीसियाओं के परखने वाले के रूप में
		2:1-3:22	एशिया माइनर की 7 स्थानीय कलीसियाओं को 7 पत्र इफिसुस, स्मुरना, पिरगमुन, थुआतीरा, सरदीस, फिलदिलफिया, लौदीकिया
4:1-8:1	दूसरा अंक या इकाई या चक्र	न्याय की तैयारी और आरंभ	
		4:1-5:14	प्रील्यूड: सृष्टिकर्ता और मेघे का सिंहासन-दर्शन
		6:1-17	7 मुहरों का खोला जाना
		7:1-17	इंटरल्यूड (बीच का वादन, बीच का अंश)(1,44,000 मुहर लगाए हुए, बड़ी भीड़)
		8:1 आदि	7वीं मुहर
8:2-11:18	तीसरा अंक या इकाई या चक्र	7 तुरहियाँ	
		8:2-6	प्रील्यूड (स्वर्गीय धूप-वेदी का दर्शन)
		8:7-9:21	7 तुरहियाँ (तुरही-न्याय)
		10:1-11:14	इंटरल्यूड (2 गवाह)
		11:15-18 आदि	7वीं तुरही – मसीह का विश्व-राज्य आ गया है।

स्थान		अध्याय और पद	विषय-वस्तु
11:19-14:20	चौथा अंक या इकाई या चक्र	परमेश्वर और शैतान के बीच महान संघर्ष	
		11:19-12:12	प्रील्यूड (स्वर्ग का दर्शन: वाचा का संदूक) स्त्री और बालक
		12:13-13:18	शैतानी त्रिएकता: 12:13-18 स्वर्गीय अजगर, पुराना साँप 13:1-10 समुद्री राक्षस 13:11-18 पृथ्वी का राक्षस
		14:1-5	इंटरल्यूड (मेम्ना और 1,44,000 मुहर लगाए हुए)
		14:6-13	तीन स्वर्गदूतों का संदेश: (सनातन सुसमाचार, बेबीलोन गिर पड़ा, अनंत न्याय की घोषणा)
		14:14-20 आदि	पोस्टल्यूड (मसीह के आगमन का न्याय-दर्शन) सारी पृथ्वी की अनाज की कटनी/अंगूर की कटनी
15:1-16:17	पाँचवाँ अंक या इकाई या चक्र	पृथ्वी के निवासियों पर 7 कटोरा-न्याय	
		15:1-16:1	प्रील्यूड (मंदिर का दर्शन)
		16:2-17 आदि	7 कटोरा-न्याय, जो परमेश्वर के प्रकोप को पूरा करते हैं
		16:15	इंटरल्यूड (धन्य-वचन)
16:18-19:10	छठा अंक या इकाई या चक्र	वेश्या बेबीलोन पर दंड का न्याय	
		16:18-17:3क	प्रील्यूड (7वें कटोरे वाला स्वर्गदूत)
		17:3ख-18	बेबीलोन का भेद और पहले पशु से उसका संबंध
		18:1-24	बेबीलोन का विनाश
		19:1-10 आदि	पोस्टल्यूड (स्वर्ग में जयजयकार – वेश्या बेबीलोन के विपरीत मेम्ने की सच्ची दुल्हन)
19:11-21:1	सातवाँ अंक या इकाई या चक्र	तीन गुना अंतिम न्याय	
		19:11-18	प्रील्यूड (मसीह प्रकट होता है – स्वर्ग खुला हुआ)
		19:19-21	समुद्री/पृथ्वी के राक्षस के विरुद्ध युद्ध और उन पर अंतिम न्याय
		20:1-10	अजगर, अर्थात् शैतान के लिए 1000 वर्ष का कारागार, 1000 वर्ष मसीह का शासन, मिलेनियम, अंतिम विद्रोह
		20:11-15	श्वेत सिंहासन: मृतकों पर अंतिम न्याय

स्थान		अध्याय और पद	विषय-वस्तु
		21:1 आदि	पोस्टल्यूड (नया आकाश और नई पृथ्वी)
21:2-22:5	(8वाँ) अंतिम अंक और चरम बिंदु	पूर्णता में यीशु मसीह की कलीसिया	
		21:2-10क	प्रील्यूड (कटोरे वाला एक स्वर्गदूत)
		21:10ख-22:5	नए यरूशलेम का दर्शन, नया आकाश, नई पृथ्वी
22:6-21	उपसंहार (एपिलॉग)	6-9	समापन
		10-20	पश्चलेख
		21	आशीर्वाद

रोल्फ जे. पोलर (Rolf J. Pöhler) के अनुसार

देखो, उन्हें दफ़नाना पड़ा,
जिन्होंने संसार को आज्ञाएँ दीं,
और उनका वचन टिका नहीं।
उनके घर खंडहर बन गए,
उनके सिक्के अब नहीं चलते,
जो मिट्टी में पाए गए।
उनके नाम खो गए,
उनके गीत अब गाए नहीं जाते,
उनके राज्य सूने पड़े हैं,
उनकी मुहरें टूट चुकी हैं,
उनकी भाषाएँ अब बोली नहीं जातीं,
उनकी व्यवस्था कब की मिट चुकी है।

यीशु का नाम बना रहेगा,
यीशु का राज्य कभी नष्ट न होगा,
उसकी आज्ञा सदा मान्य है।
यीशु के वचन के सामने सब कुछ हट जाएगा,
और कोई मृत्यु उस तक नहीं पहुँच सकती।
यीशु युगानुयुग राज्य करता है

17. (अ)पवित्र त्रिएकता, अध्याय 12-14

ईश्वरीय त्रिएकता	शैतानी त्रिएकता
पिता	स्वर्गीय अजगर
पुत्र को अधिकार और सिंहासन देता है 2:28 3:21 12:5	“पशु” को अधिकार और सिंहासन देता है 13:2, 7

ईश्वरीय त्रिएकता	शैतानी त्रिएकता
पुत्र	समुद्र से निकलने वाला पहला पशु
मीकाएल = परमेश्वर के समान कौन है?" 12:7	पशु के समान कौन है?" 13:4
एक मेम्रा 5:6 आदि 11:1 आदि	एक राक्षस/मिश्रित पशु 13:2
7 सींगों वाला 5:6	10 सींगों वाला 13:1
और बहुत-से मुकुटों वाला 14:14 19:12	और 10 मुकुटों वाला 13:1
और (महिमा के) नामों वाला 19:12, 16	और (निंदा के) नामों वाला 13:1
पृथ्वी पर 3½ वर्ष कार्य करता है	पृथ्वी पर 3½ वर्ष उत्पात मचाता है 12:6, 14 13:5
उसे घातक घाव लगता है 5:6, 12	उसे घातक घाव लगता है 13:3, 12, 14
था - है - फिर आएगा 1:4, 8 4:8 11:17	था - नहीं है - फिर आएगा 17:8, 11
पुनरुत्थान का अनुभव करता है 1:18	पुनरुत्थान का अनुभव करता है 13:3, 12, 14
सिंहासन पर बैठाया जाता है 3:21 5:12 12:5	सिंहासन पर बैठाया जाता है 13:2, 7
स्वर्ग के निवासी उसकी आराधना करते हैं 5:8 आदि 7:10 12:10 15:2-4 22:3	पृथ्वी के निवासी उसकी आराधना करते हैं 13:4, 8
जो मुहर धारण करते हैं 7:3 14:1	जो छाप धारण करते हैं 13:16 19:20
विजेता और जय पाने वाला है 5:5	विजेता और जय पाने वाला है 13:7
पवित्र लोगों के लिए लड़ता है 19:11 आदि	पवित्र लोगों के विरुद्ध लड़ता है 13:7
परमेश्वर के नाम से बोलता है 19:13	अजगर के नाम से बोलता है 13:5
पवित्र आत्मा	पृथ्वी से निकलने वाला दूसरा पशु
सच्चा भविष्यद्वक्ता(-आत्मा) तुलना कीजिए यूहन्ना 14:16-26 15:26 16:5-15	झूठा भविष्यद्वक्ता(-आत्मा) प्रकाशितवाक्य 16:13
मसीह का प्रतिनिधि है	पशु का प्रतिनिधि है 13:12
	उसके मेम्रे जैसे सींग हैं 13:11
मेम्रे की तरह बोलता है	एक/उस अजगर की तरह बोलता है
मनुष्यों को मेम्रे की आराधना की ओर ले जाता है	मनुष्यों को बहकाकर पशु की आराधना कराता है 13:12, 14
आकाश से आग गिराता है प्रेरितों 2:3	आकाश से आग गिराता है 13:13 आदि
जीवन देता है 11:11	जीवन देता है 13:15
परमेश्वर की मुहर देता है = मेम्रे का नाम 7:1 आदि 14:1	शैतान की छाप थोपता है = "पशु" का नाम 13:16-18

रोल्फ जे. पोलर (Rolf J. Pöhler) के अनुसार

18. प्रकाशितवाक्य में मसीह और उसके नाम

	नाम	संख्या	प्रकाशितवाक्य में बाइबल-संदर्भ
1	यीशु मसीह	4	1:1, 2, 5, 9
2	विश्वासयोग्य साक्षी	1	1:5
3	मरे हुआओं में से जी उठने वालों में पहलौठा	1	1:5
4	पृथ्वी के राजाओं का हाकिम	1	1:5
5	अल्फा और ओमेगा	3	1:8; 21:6; 22:13
6	यीशु	8	1:9; 12:17; 14:12; 17:6; 19:10, 10; 20:4; 22:16
7	प्रभु	2	1:10; 12:13
8	मनुष्य के पुत्र सरीखा एक पुरुष	2	1:13; 14:14
9	प्रथम और अंतिम	3	1:17; 2:8; 22:13
10	जीवता	3	1:18; 4:9, 10
11	जो सातों तारे अपने दाहिने हाथ में लिए हुए है	1	2:1
12	जिसके पास दोधारी और चोखी तलवार है	1	2:12
13	परमेश्वर का पुत्र, जिसकी आँखें हैं	1	2:18
14	भोर का तारा	2	2:28; 22:16
15	जिसके पास परमेश्वर की सात आत्माएँ हैं ...	1	3:1
16	जो पवित्र और सत्य है ...	1	3:7
17	आमीन	17	3:14
18	विश्वासयोग्य और सच्चा साक्षी		3:14
19	परमेश्वर की सृष्टि का मूल	1	3:14
20	यहूदा के गोत्र का सिंह	1	5:5
21	दाऊद का मूल	2	5:5; 22:16
22	मेघना	27	5:6, 8, 12, 13; 6:1, 16; 7:9, 10, 14, 17; 12:11 13:8; 14:1, 4, 4, 10; 15:3; 17:14, 14; 19:7, 9; 21:9, 14, 22, 23, 27; 22:1, 3
23	उनका (गवाहों का) प्रभु	1	11:8

	नाम	संख्या	प्रकाशितवाक्य में बाइबल-संदर्भ
24	उसका मसीह	2	11:15; 12:11
25	एक पुत्र, अर्थात् नर बालक ...	1	12:5
26	नर बालक	1	12:13
27	जो बादल पर बैठा था	2	14:15, 16
28	प्रभुओं का प्रभु	2	17:14; 19:16
29	राजाओं का राजा	2	17:14; 19:16
30	विश्वासयोग्य और सत्य	1	19:11
31	परमेश्वर का वचन	1	19:13
32	मसीह	2	20:4, 6
33	जो सिंहासन पर बैठा था	1	21:5
34	आदि और अंत	2	21:6; 22.13
35	दाऊद का मूल और वंश	1	22:16
36	प्रभु यीशु	1	22:20
37	प्रभु यीशु मसीह	1	22:21
		89	

स्रोत: Werner Mücher, Die Offenbarung

19. आरंभ और अंत – मूसा और यूहन्ना

बाइबल के आरंभ और अंत के बीच कई संबंध हैं, जो हमें दिखाते हैं कि बाइबल एक संपूर्ण इकाई है, जिसका एक लेखक और एक योजना है।

आरंभ में	अंत में
उत्प. 1:1 आदि में परमेश्वर ने आकाश और पृथ्वी की सृष्टि की।	प्रका. 22:13 ख मैं ही आदि हूँ ...
उत्प. 1:1 आकाश और पृथ्वी।	प्रका. 21:1 फिर मैं ने नये आकाश और नई पृथ्वी को देखा।
उत्प. 1:2 और गहरे जल के ऊपर अंधियारा था।	प्रका. 22:5 और फिर रात न होगी (तुलना कीजिए प्रका. 21:25)।
उत्प. 1:3 तब परमेश्वर ने कहा : उजियाला हो ! तो उजियाला हो गया।	प्रका. 21:23 परमेश्वर की महिमा से उसमें उजियाला है, और मेघना उसका दीपक है।
उत्प. 1:10 और जो जल इकट्ठा हुआ उसको उसने समुद्र कहा।	प्रका. 21:1 और समुद्र भी न रहा।

आरंभ में	अंत में
उत्प. 1:14-16 ... सूर्य और चंद्रमा, कि पृथ्वी पर प्रकाश दें।	प्रका. 21:23 उस नगर को सूर्य और चाँद के उजियाले की आवश्यकता नहीं।
उत्प. 1:16 और तारे भी।	प्रका. 22:16 मैं भोर का चमकता हुआ तारा हूँ।
उत्प. 2:4-5 सब वस्तुएँ सृजी और बनाई गई।	प्रका. 21:5 और जो सिंहासन पर बैठा था, उसने कहा : देख, मैं सब कुछ नया कर देता हूँ।
उत्प. 2:9 वाटिका के बीच में जीवन का वृक्ष।	प्रका. 22:2 नगर की सड़क के बीच में जीवन का वृक्ष है।
उत्प. 2:10 और वाटिका को सींचने के लिए एक नदी अदन से निकली।	प्रका. 22:1 जीवन के जल की एक नदी, जो बिल्लौर के समान झलकती थी और परमेश्वर और मेमे के सिंहासन से निकलती थी।
उत्प. 2:11 हवीला देश, जहाँ सोना मिलता है, और उस देश का सोना चोखा होता है।	प्रका. 21:18 नगर ऐसे चोखे सोने का है, जो स्वच्छ काँच के समान हो।
उत्प. 2:12 बहुमूल्य पत्थर।	प्रका. 21:19 और नगर की शहरपनाह की नेवें हर प्रकार के बहुमूल्य पत्थरों से सँवारी हुई थीं।
उत्प. 4:17 कैन का बसाया हुआ एक नगर।	प्रका. 21:2 फिर मैं ने पवित्र नगर नये यरूशलेम को स्वर्ग से परमेश्वर के पास से उतरते देखा, और वह उस दुल्हन के समान थी जो अपने पति के लिए सिंगार किए हो।
उत्प. 2:15 मनुष्यों के साथ परमेश्वर की संगति।	प्रका. 21:3 और वह उनके (मनुष्यों के) साथ डेरा करेगा।
उत्प. 2:21-23 एक दुल्हन उसके पुरुष के पास लाई जाती है।	प्रका. 21:2 उस दुल्हन के समान जो अपने पति के लिए सिंगार किए हो।
उत्प. 3:1 सर्प धोखेबाज़ के रूप में अपना काम आरंभ करता है।	प्रका. 20:10 वह पुराना साँप, जो जातियों को भरमाता है, आग और गंधक की झील में डाल दिया गया।
उत्प. 3:4 झूठ का प्रवेश होता है।	प्रका. 21:27 और उस नगर में कोई ऐसा प्रवेश न करेगा जो घृणित काम करता या झूठ गढ़ता है।
उत्प. 3:7 उन्हें मालूम हुआ कि वे नंगे हैं; इसलिए उन्होंने अजीर के पत्ते जोड़-जोड़कर लंगोट बना लिए।	प्रका. 19:8 और उसको शुद्ध और चमकदार महीन मलमल पहनने का अधिकार दिया गया ; क्योंकि उस महीन मलमल का अर्थ पवित्र लोगों के धर्म के काम हैं।
उत्प. 3:7 मानवजाति खो गई।	प्रका. 21:24 जातियाँ बचाई गई।
उत्प. 3:8 तब मनुष्य और उसकी पत्नी वाटिका के वृक्षों के बीच यही परमेश्वर से छिप गए।	प्रका. 21:3 देख, परमेश्वर का डेरा मनुष्यों के बीच में है।
उत्प. 3:17-19 परिश्रम और मेहनत का दंड ठहराया गया।	प्रका. 21:4 और वह उनकी आँखों से सब आँसू पोंछ डालेगा। न शोक, न विलाप, न पीड़ा रहेगी।
उत्प. 3:19 मृत्यु का दंड ठहराया गया।	प्रका. 21:4 मृत्यु न रहेगी।
उत्प. 3:17 एक शाप सुनाया गया।	प्रका. 22:3 और फिर किसी प्रकार का शाप न होगा।
उत्प. 3:15 बड़ी प्रतिज्ञा।	प्रका. 20-22 प्रतिज्ञा पूरी हुई।

20. देखी गई टीकाएँ

Allen, James, Die Offenbarung, Was die Bibel lehrt, Dillenburg, 1999

Baines, T.B., The Revelation of Jesus Christ, London, 1905

Barclay, William, Das sagt der Auferstandene, Kassel, 1967

Beale, Gregory K., The Book of Revelation: A Commentary on the Greek Text, Grand Rapids, 1999

Dennet, Edward, The Vision of John in Patmos

Dönges, Dr. Emil, Was bald geschehen muss, Dillenburg, 1985

Frey, Hellmuth, Das Ziel aller Dinge, Das erweckliche Wort, Lahr-Dinglingen, 1977

Grant, F.W., Numerical Bible, New Jersey, 1978

Gregg, Steve, Revelation, Four Views, A Parallel Commentary, Nashville, 1997

Guthrie, Donald, New Testament Introduction, Don Mills 1970

Hartenstein, Karl, Der wiederkommende Herr, Stuttgart, 1948

Hausoul, Raymond R., Openbaring, <http://bijbelstudie.110mb.com/index.php>, 2009

Hinkelmann, Frank, Die sieben Sendschreiben der Offenbarung, Nürnberg, 2004

Keck, Erwin, Die Offenbarung, Route 66 – Quer durch die Bibel,
<http://www.ewaldkeck.de/downloads/route66.html>

Jettel, Thomas, Gedanken zur Gliederung des Buches der Offenbarung, 2010, अप्रकाशित
पांडुलिपि

Ladd, Georg Eldon, A Commentary on the Revelation on John, Grand Rapids, 1972

Johnson, Dennis E., Triumph of the Lamb, New Jersey, 2001

Kelly, William, The Revelation, London, 1901

Ouweneel, W.J., De Openbaring van Jesus Christus, Deel 1 en 2, Vaasen, 1988

Peters, Benedikt, Geöffnete Siegel, Berneck, 1991

Poythress, Vern S., The returning King, New Jersey, 2000

Rossier, Henry, Die symbolische Sprache der Offenbarung, Neustadt, 1972

Smith, Hamilton, Die Sendschreiben an die sieben Versammlungen, Interlaken

Tenney, Merrill C., Die Welt des Neuen Testaments, Marburg, 1979

Trail, Ronald L. AN EXEGETICAL SUMMARY OF REVELATION, SIL International, Texas, 2008